

न्यायालय संभागीय आयुक्त जयपुर

अपील जीसीएमएस संख्या 2024/258

1. आयुष गुप्ता पुत्र श्री मनोज कुमार जाति महाजन निवासी-खादी भण्डार के सामने, बरसी तहसील बरसी जिला जयपुर राज०।

-अपीलान्त

बनाम

1. श्रीमती गोपाली देवी पुत्री रामनिवास पत्नि श्री दामोदर प्रसाद जाति महाजन, निवासी ग्राम बरसी, तहसील बरसी, जयपुर राज०।

-मुख्य रेषपोडेन्ट

2. राधेश्याम दत्तक पुत्र रामनिवास जाति महाजन, निवासी 2, जी.डी., रेल विहार, सेक्टर 9, विद्याधर नगर, जयपुर।
3. सरकार जरिये तहसीलदार तूंगा, तहसील तूंगा, जयपुर।

-प्रोफार्मा रेषपोडेन्ट

द्वितीय अपील अन्तर्गत धारा 76 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 बखिलाफ निर्णय दिनांक 31/5/2024 न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रथम जयपुर जिला जयपुर अपील संख्या 266/2023 जिसके द्वारा उन्होने अपीलार्थी के हक मे पारित नामान्तरण न. 1198 दिनांक 21.06.2023 तहसीलदार तूंगा को निरस्त कर पत्रावली को रिमाण्ड कर दिया।

उपस्थित-

1. श्री निर्मल कुमार जैन वकील अपीलान्त
2. श्री राजाराम चौधरी वकील रेषपोडेन्ट नं. 1 की ओर से।
3. राजकीय अधिवक्ता रेषपोडेन्ट नं. 3 की ओर से।

निर्णय

दिनांक -14.08.2024

1. यह अपील राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 76 के अन्तर्गत अति० जिला कलेक्टर प्रथम जयपुर के निर्णय दिनांक 31.05.2024 के खिलाफ प्रस्तुत हुई है।
2. प्रकरण के संक्षिप्त तथ्य इस प्रकार है कि रेषपोडेन्ट संख्या 1 ने ग्राम तूंगा के खसरा नं. 1362, 1367, 1368, 1371, 1372, 1375, 1376, 1379, 1380, 1383, 1384 कुल कित्ता 12 कुल रकबा 4.25 है० के तहसीलदार तूंगा द्वारा खोले गये नामान्तरकरण संख्या 1198 दिनांक 21.06.2023 को गलत बताते हुये इसकी अपील अधीनस्थ न्यायालय अति० जिला कलेक्टर प्रथम जयपुर के समक्ष प्रस्तुत की जिस पर अधीनस्थ न्यायालय द्वारा तहसीलदार तूंगा का आदेश दिनांक 21.06.2023 को निरस्त करते हुये प्रकरण रिमाण्ड कर उभय पक्षकारान एवं अपीलाधीन भूमि की वर्तमान जमाबन्दी में निहित समस्त काश्तकार को विधिवत नोटिस जारी

कर. नियमानुसार सुनवाई का समुचित अवसर देकर, प्रस्तुत साक्ष्य, सबूत, दस्तावेजात के आधार पर बाद जांच कानूनी प्रावधान तथा प्रक्रिया अनुसार एवं न्यायालय सहायक कलक्टर बरसी में विचाराधीन दावे में पारित निर्णय तथा गुणावगुण के आधार पर पुनः निर्णय पारित करने के आदेश दिनांक 31.05.2024 को दिए गये।

3. अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर के उक्त निर्णय दिनांक 31.05.2024 से व्यथित होकर अपीलान्त आयुष गुप्ता पुत्र श्री मनोज कुमार द्वारा यह अपील प्रस्तुत कर अपील स्वीकार करने एवं अपीलाधीन आदेश अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर के निर्णय दिनांक 31.05.2024 निरस्त कर नामान्तरकण संख्या 1198 दिनांक 21.06.2023 को बहाल किये जाने की प्रार्थना की।
4. अपील प्रस्तुत होने पर रेस्पोंडेन्ट्स की तलबी की गई। उभयपक्ष के योग्य अधिवक्ताओं व राजकीय अधिवक्ता की बहस, बहस एडमिशन पर सुनी गई।
5. अपीलान्त के योग्य अधिवक्ता ने बहस के दौरान अपील मीमो में अंकित तथ्यों को दौहराते हुये मुख्य रूप से कथन किया कि अधिनस्थ न्यायालय के समक्ष नामान्तरकण नं. 1198 दिनांक 21/6/2023 के विरुद्ध अपील लम्बित थी तथा उक्त नामान्तरकण स्पष्ट रूप से रजिस्टर्ड उपहार पत्र के आधार पर स्वीकृत किया गया है ऐसे में अधिनस्थ न्यायालय को केवल और केवल मात्र यह देखना था कि तहसीलदार तूंगा ने रजिस्टर्ड उपहार पत्र के आधार पर स्वीकृत नामान्तरकण नं. 1198 दिनांक 21/06/2023 को स्वीकृत करने में क्या अवैधानिकता की है या किस कानून का उल्लंघन किया है या क्या तहसीलदार तूंगा को इस नामान्तरकण को स्वीकृत करने का क्षेत्राधिकार नहीं था उक्त तीनों ही बिन्दु रेस्पोंडेन्ट नं. 1 (तत्कालीन अपीलार्थी) के खिलाफ थे, तहसीलदार ने रजिस्टर्ड उपहार पत्र के आधार पर नामान्तरकण पूर्णतया कानूनी रूप से स्वीकृत किया था तथा उपहारकर्ता एक रिकॉर्डेड खातेदार था लेकिन अधिनस्थ न्यायालय ने आक्षेपित नामान्तरकण व आदेश की वैधानिकता को नहीं देखा तथा बिना किसी आधार के उक्त नामान्तरकण को निरस्त कर दिया। स्व. रामनिवास जी की विरासत का नामान्तरकण सं. 24 दिनांक 13/04/1973 अर्थात आज से करीब 51 वर्ष पूर्व ही राधेश्याम रेस्पोंडेन्ट नं. 2 के नाम स्वीकृत हो चुका था जिस नामान्तरकण को सभी के समक्ष नायब तहसीलदार तूंगा ने स्वीकृत किया था जिस नामान्तरकण के विरुद्ध रेस्पोंडेन्ट नं. 1 ने कोई भी अपील प्रस्तुत नहीं की है रेस्पोंडेन्ट नं. 2 राधेश्याम जी गत 51 वर्षों से वादग्रस्त भूमि के रिकॉर्डेड खातेदार है रेस्पोंडेन्ट नं. 1 ने कभी भी इस बाबत कोई भी एतराज नहीं किया इतने वर्ष बाद उसने फर्जी तथ्यों पर यह अपील पेश की है चूंकी 13/04/1973 के नामान्तरकण बाबत ना तो कोई अपील प्रस्तुत की ना ही इस बाबत कोई विवाद था किन्तु फिर भी अधिनस्थ न्यायालय ने बिना किसी आधार के क्षेत्राधिकार से बाहर जाकर सन् 1973 के विरासत नामान्तरकण पर बिना वजह शंका करते हुये रजिस्टर्ड उपहार पत्र के नामान्तरकण को निरस्त कर दिया है। अधिनस्थ न्यायालय ने बिना किसी आधार के रेस्पोंडेन्ट नं. 1 को रामनिवास की जायन्दा पुत्री बताते हुये धारा 6 हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम के प्रावधानो का वर्णन किया है जबकि विधि का यह सुस्थापित सिद्धांत है कि नामान्तरकण की कार्यवाही में किसी भी पक्ष के अधिकार तय नहीं होते हैं नामान्तरकण कि कार्यवाही एक फिस्कल प्रोसिडिंग होती है। स्वयं रेस्पोंडेन्ट नं. 1 ने खातेदारी घोषणा का वाद सहायक कलेक्टर बरसी के यहाँ प्रस्तुत कर रखा है अगर रेस्पोंडेन्ट नं. 1 का कोई हक अधिकार होगा तो वह नियमित वाद में तय हो जावेगा लेकिन अधिनस्थ न्यायालय ने स्वयं अपनी तरफ से रेस्पोंडेन्ट नं. 1 को हक अधिकारी बताते हुये आक्षेपित आदेश पारित किया है। मूल खातेदार स्व. रामनिवास जी ने अपने जीवन काल में ही राधेश्याम जी को दत्तक पुत्र ले लिया था, रामनिवास जी एवं उसकी

पत्नि श्रीमति गोविन्दी देवी हमेशा अपने जीवन काल में अपने पुत्र राधेश्याम जी के साथ ही रहे। समस्त दस्तावेजों में पिता का नाम रामनिवास ही अंकित है राधेश्याम जी को अपने जायन्दा पिता जुगल किशोर जी से सम्पत्ति में किसी भी प्रकार का हिस्सा नहीं मिला है स्वयं रामनिवास जी ने अपने दत्तक पुत्र व पुत्री में बँटवारा कर दिया था तथा रेस्पोंडेन्ट नं. 1 के नाम भी पृथक से भूमि लगवा दी थी तथा नकद व जेवरात आदि दे दिये थे इसी आधार पर स्वयं गोपाली देवी रेस्पोंडेन्ट नं. 1 की जानकारी व सहमति से ही राधेश्याम जी के नाम नामान्तरण सन् 1973 में ही स्वीकृत हो गया था। राधेश्याम जी गत 51 वर्षों से रिर्कोर्डेड खातेदार हैं ऐसे में उन्हें अपनी भूमि का हर तरह से उपयोग उपयोग हस्तान्तरण करने के अधिकार प्राप्त थे तथा उन्होंने अपनी पौत्री के हक में रजिस्टर्ड उपहार पत्र निष्पादित किया था तथा रजिस्टर्ड उपहार पत्र के आधार पर नामान्तरण स्वीकृत किया गया था। इसके बावजूद भी अधीनस्थ न्यायालय द्वारा भी तथ्यों पर गौर किये बिना अपीलाधीन आदेश पारित किये गये जो प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्तों के विरुद्ध एवं विधिसम्यक नहीं होने से खारिज किये जाने योग्य हैं। अतः अपील अपीलान्त स्वीकार की जाकर अपीलाधीन आदेश अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर दिनांक 31.05.2024 निरस्त किया जावे।

6. रेस्पोंडेन्ट के योग्य अधिवक्ता ने अपील का विरोध करते हुये मुख्य रूप से कथन किया कि प्रश्नगत भूमि हाल खसरा नंबर 1362, 1367, 1368, 1371, 1372, 1375, 1376, 1379, 1380, 1383, 1384 कुल किता 12 कुल रकबा 4.25 है० वार्के ग्राम तूंगा, तहसील तूंगा के मूल खातेदार रेस्पों० संख्या 1 गोपाली देवी के पिता रामनिवास पुत्र रूडमल थे एवं रामनिवास के एकमात्र पुत्री संतान गोपाली देवी हुई एवं गोपाली देवी के अलावा स्व० रामनिवास के कोई पुत्र या पुत्री संतान नहीं हुई। ऐसी स्थिति में रेस्पों० संख्या 1 गोपाली देवी एकमात्र प्रथम श्रेणी की वारिस हैं। रेस्पों० संख्या 2 जो कि जुगलकिशोर का पुत्र है उसने अपने आपको रामनिवास का दत्तक पुत्र बताते हुये एवं पगडी के आधार पर अपने हक में नामान्तरण खुलवा लिया जबकि रेस्पों० संख्या 2 के हक में कोई पंजीबद्ध गोदनामा नहीं है एवं उसके अलावा रामनिवास के एकमात्र जायन्दा पुत्री के जीवित रहते हुये रेस्पों० संख्या 2 ने गोपाली देवी की पैतृक भूमि को हडप करने के लिये साजिशाना तौर पर नामान्तरण तस्दीक करवाया है। जबकि रेस्पों० संख्या 2 के हक में कोई गोदनामा उल्लेखित नहीं है। उसके पश्चात रेस्पों संख्या 2 ने गलत नीयत के चलते गोपाली देवी की पैतृक सम्पत्ति की गिफ्ट डीड अपनी पौत्रअपीलांट के हक में कर दी जो कि गोपाली देवी के हक व अधिकारों के मुकाबले प्रारम्भ से शून्य है। गोपाली देवी के पिता स्व० रामनिवास एवं माता ने कभी भी रेस्पों० संख्या 2 को उसके जन्मदाता पिता से गोद नहीं लिया एवं रेस्पों० संख्या 1 के माता-पिता ने कभी भी रेस्पों० संख्या 2 के पक्ष में कोई गोद की लिखावट नहीं की गयी। रेस्पों० संख्या 1 की पैतृक सम्पत्ति जो कि रेस्पों० संख्या 2 के नाम अवैध रूप से दर्ज हुई उसके संबंध में रेस्पों० संख्या 1 ने सहायक कलक्टर महोदय बस्सी जिला जयपुर के समक्ष घोषणा एवं स्थायी निषेधाज्ञा का वाद प्रस्तुत कर रखा है जिसमें रेस्पों० संख्या दो वकातलन उपस्थित है। रेस्पों० संख्या 2 द्वारा रेस्पों० संख्या 3 के हक में रजि० उपहार पत्र निष्पादित किया गया एवं जिसके आधार पर अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार तूंगा ने रेस्पों० संख्या 1 को बिना सुनवाई का अवसर दिये अपीलाधीन नामान्तरण द्वारा तस्दीक कर भूमि का हस्तांतरण का अपीलांट के हक में कर दिया जो निरस्त किये जाने योग्य है। रेस्पों० संख्या 1 गोपाल देवी रामनिवास की जायन्दा पुत्री है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने हिन्दू उत्तराधिकार संशोधित अधिनियम 2005 की धारा 6 में संशोधन करते हुए पिता की सम्पत्ति में पुत्री को भी जन्म से

पुत्र के समान उत्तराधिकारी माना है अर्थात् पुत्र और पुत्री को पिता संपत्ति में बराबर का उत्तराधिकार मिलेगा चाहे उसके पिता की मृत्यु कभी भी हुई हो। ऐसी स्थिति में अधीनस्थ न्यायालय अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर ने विधिवत् हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार प्रश्नगत भूमि को रेस्पो० संख्या 1 की पैतृक भूमि मानते हुये तहसीलदार तूंगा द्वारा खोले गये नामान्तरकरण संख्या 1199 दिनांक 21.06.2023 को निरस्त किया गया है। जो कि उचित एवं विधिसम्पक है, जिसे यथावत रखते हुये अपील अपीलान्ट खारिज की जावे।

7. हमने विद्वान अधिवक्ता उभयपक्ष की बहस पर मनन किया तथा प्रकरण के अभिलेख को देखा एवं प्रकरण के तथ्यों पर विचार किया। पत्रावली के अवलोकन से जाहिर होता है कि ग्राम तूंगा के खसरा नं. 1362, 1367, 1368, 1371, 1372, 1375, 1376, 1379, 1380, 1383, 1384 कुल किता 12 कुल रकबा 4.25 है० के रिकॉर्डेड खातेदार काश्तकार रामनिवास पुत्र रूडमल था एवं प्रकरण में मूल विवाद मृतक खातेदार रामनिवास पुत्र रूडमल की विरासत को लेकर है। रेस्पोडेण्ट संख्या 1 ने उक्त भूमि का नामान्तरकरण बिना किसी गोदनामे के रेस्पो० संख्या 2 के हक में होने एवं तत्पश्चात् रेस्पो० संख्या 2 द्वारा अपनी पौत्र अपीलांट के हक में उपहार पत्र के आधार पर तहसीलदार तूंगा द्वारा खोले गये नामान्तरकरण संख्या 1198 दिनांक 21.06.2023 को गलत बताते हुये इसकी अपील अधीनस्थ न्यायालय अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर के समक्ष प्रस्तुत करने पर अधीनस्थ न्यायालय द्वारा हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार प्रश्नगत भूमि को रेस्पो० संख्या 1 की पैतृक भूमि मानते हुये तहसीलदार तूंगा द्वारा खोले गये नामान्तरकरण संख्या 1199 को निरस्त किया गया है। इस संबंध में हमारा विनम्र मत है कि सर्वप्रथम रेस्पो० संख्या 2 ने स्वयं ने यह कथन किया है कि रेस्पो० संख्या 1 उसकी बहिन एवं मृतक खातेदार रामनिवास पुत्र रूडमल की एकमात्र पुत्री है। ऐसी स्थिति में यह स्वीकृत तथ्य है कि रेस्पो० संख्या 1 मृतक खातेदार की पुत्री है और विधिक वारिस है। हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार पिता की सम्पत्ति में पुत्री को भी जन्म से पुत्र के समान उत्तराधिकारी माना है अर्थात् पुत्री को पुत्र के समान पिता की संपत्ति में बराबर का अधिकार समाहित है। ऐसे में तहसीलदार तूंगा द्वारा रेस्पो० संख्या 1 के पैतृक भूमि में अधिकारों का समाप्त कर केवल अपीलांट के हक में नामान्तरकरण तस्दीक किया जाना विधिसम्मत नहीं है। पूर्व में रेस्पो० संख्या 2 के हक में तस्दीक नामान्तरकरण पगडी/गोदनामें के आधार पर खोला गया है जिसके संबंध में खातेदारी घोषणा का नियमित वाद सहायक कलेक्टर बस्सी के यहाँ विचाराधीन है जिसके तहत अधिकारों का निर्धारण तय हो जावेगा। उक्त नियमित वाद के विचाराधीन रहते तहसीलदार तूंगा द्वारा नामान्तरकरण तरदीक किया जाना उचित नहीं है। ऐसी स्थिति में अधीनस्थ न्यायालय अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर द्वारा विधिवत् ही उक्त सभी तथ्यों पर गौर व अवलोकन करने की उपरान्त ही तहसीलदार तूंगा का नामान्तरकरण संख्या 1199 आदेश दिनांक 21.06.2023 को निरस्त करते हुये प्रकरण रिमाण्ड कर उभय पक्षकारान को विधिवत् नोटिस जारी कर, नियमानुसार सुनवाई का समुचित अवसर देकर, प्रस्तुत साक्ष्य, सबूत, दस्तावेजात के आधार पर एवं न्यायालय सहायक कलक्टर बस्सी में विचाराधीन दावे में पारित निर्णय तथा गुणावगुण के आधार पर पुनः निर्णय पारित करने के ही आदेश दिए गये हैं। जिससे अगर अपीलांट को कोई

आपत्ति भी है तो वह तहसीलदार तूंगा के समक्ष अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। नामान्तरकरण एक Fiscal Proceeding है इसके तहत अधिकारों को निर्धारण नहीं किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में अधीनस्थ न्यायालय अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर का अपीलाधीन आदेश उचित व विधिसम्पक है। इसमें किसी प्रकार की त्रुटि प्रतीत नहीं होती है। इसमें हस्तक्षेप किया जाना उचित नहीं समझते हैं। न्यायालय द्वारा पूर्व में ही अपीलाधीन भूमि के संबंध में मूल विरासत के विरुद्ध प्रस्तुत अपील संख्या 2024/294 उनवानी राधेश्याम बनाम गोपाली व अन्य में दिनांक 16.07.2024 को अपील निर्णित कर खारिज किया जा चुका है अतः प्रस्तुत अपील को बहस एडमिशन के स्तर पर ही खारिज किया जाना उचित समझते हैं।

अतः आदेश है कि: अपील अपीलांत बहस एडमिशन के स्तर पर ही निरस्त की जाती है तथा अधीनस्थ न्यायालय अति० जिला कलक्टर प्रथम जयपुर का निर्णय दिनांक दिनांक 31.05.2024 यथावत रखा जाता है।

(डॉ आरूषी मलिक)

संभारणीय आयुक्त

जयपुर

निर्णय आज दिनांक 14.08.2024 को खुले न्यायालय में सुनाया गया।

संभारणीय आयुक्त

जयपुर

जयपुर